

वल्लव वे शोच नृप ह कश्च राजाय गथा गगाया इह न सम्यक् वद्धा
 या गयथा ॥ ॐ ॥ श्री २ सं २ समय २ भर्तृ २ दान २ समा प्रायश्च
 ना लं व ग लं व य ॥ ह व नि म दान जा नि ला तं व नि रा कृ त नि
 छि ला स र्व वि द्या ना वि द्या ना वि सि णि ग सा द्या ॥ धन २ ॥ धन त्रि च त्र
 न क र त्र त्र ॥ व ग म म ग ॥ धनिय त्रि क र्म न य जा ॥ स्नान विधि धं रु नी
 रु ल मूल गा म्बू त्रा दि दं दा द न य ॥ स म र्म ॥ ॥ धा धन लि द्या न पि रु थ
 य विधि (थं) कृ ण धि न क लि ला म्बू वि र्म वा य ॥ या ह स लु म्बू य

ग्वमागा अग्नि गुत्र साकि था सं वर्ध धर्म सद्यं कृत्यादि ॥ धन
लिक भयुणि का था येन याहं विष्ठु थय के अद्य का सं वा कृत्य
दयं येन के र्म नया य विधि थं निमिन का या अस्त्रियु राव लो
कि क विष्ठु उ धा न ना थं क र सा य ना थं अ य न मि ना इ र्ज नि य त्रि लो
ध न य र्म क र्म था य इ र्ज नि मा र ना थं स र्ज या क का म ना र्थ अ
स्मि दि न दि व यं ग न अ मू क ना म ध य य स र्वा त्र नि या क का म
ना ये न म नू ग क उ स थ ह ॥ ध न म ठा ल थि त र्क स्वा न ग न ग मि

विय द क ला अ गं वा कृत्य के धू य म ग न इ य के वि स र्ज न म उ ल नं
विष्ठु लं ध य ॥ वा य डी क क न अ स्त्रियु राव य य के थ गि न या त १३ म
नु ॥ न गी म न वा र न का र्मि लो क का तान धि मू य कृ ग थ त र कं द व
ना जं य म त ग र क व क न र व र्ज ध नं विष्ठु सु गि या थ कं म की तं १॥
दी वा हि क कि या का तं य म ४ क ल म ध न व न नं या गी गृ व थ त्रि लो व
कि र्क र्क र्क ध नं न पाल य गाय ध नं वा य अ वा श स वी द वा स त्रा
दि न स म ग क स म्य क्क वी धि नी य मा य नं दान य न अ मू क ना म

ध्याय स्वस्वावगियाक कामना धनगगल ७ सुयग ॥ धनिज
क्रिययक यान वाक काय ॥ नदीस शीयक यान वाक ॥ उं य प्र
महाय प्रय प्रस्यग हं दिवं गगजमूक नाम ध्याय स्वस्वावगिम
नगकुलु स्वभाहं ॥ धनमउल धित्रक सकनस्य नं स्थानगन या
धसमाक ४ विसृज नस्यव नु रंगयूजाद कि ॥ आसिवाग क्रम
नंमउल यागानं ज्ञाय ॥ ७० निज क्रिययक विधिसमाक ॥
॥ उं न ह २ महात्रस त्रस संर व त्र त्र कि त्र ॥ त्र त्र मा या विगु

गस्यसुसंगत्रस्य गसंगलंर वउयनमारिषक ॥ ॥ यूष्यादियूजा
ध्रुव दिय नेवद्यादि धैवयग ॥ ॥ यूष्यान्यासा ॥ उं म न २ महामून
स्वाहा ॥ उं आकमूनय स्वाहा ॥ उं वजया लय स्वाहा ॥ उं वज ह्रिय हं स्वा
हा ॥ उं अंखचकवलि नह स्वाहा ॥ उं त्र लाष्टि व हं स्वाहा ॥ उं य आष्टि
व हं स्वाहा ॥ उं विष्णुष्टि व हं स्वाहा ॥ उं गजाष्टि व हं स्वाहा ॥ उं धजा
ष्टि व हं स्वाहा ॥ उं शुगोष्टि व हं स्वाहा ॥ उं वज विकिटिन हं स्वाहा ॥
उं श्रीगागयग हं स्वाहा ॥ उं लाग्यय हं स्वाहा ॥ उं मालायग हं स्वाहा ॥

ॐ सर्वपापगतिगहनविनाशनीहंरुद्र॥ ॥००॥ व्याहृतिनागन॥ ॥
गसंखनसिनायकावनमस्तु॥ ॥ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गाय
निश्चयन राजाय गगनाय इहं गे सम्यक् वृत्ताय गद्यथा॥ ॐ एता
न शिविनाथन शसर्वपापविशुद्धन शुद्ध विशुद्ध शसर्वकर्मविनवि
शुद्ध शसर्वधर्मविशुद्ध स्थाना॥ इइ॥ ॐ कं कनिशराय निश्री नारायनि
यगिहगहन शसर्वकर्मविनयत्राहि अमृकस्य स्थधाहं॥ धनियसे

मन॥ ॐ अमाद्याय गिहगहन शसर्ववतनविनाशनिहन् अमृ
कस्य आवतनानिहंरुद्र॥ यदेगन्धा॥ ॐ तलेशमहा तलसं
व तलकिवन तलमात्रा विशुद्ध एताथय श अमृकस्य सर्वपाप
नहंरुद्र॥ धनधुतिना नाराय॥ ॐ अमृग श अमृगादे अमृग
संरुव अमृगविको गगमिन अमृकस्य सर्वकृमकयंकत्रिय
स्थधाहं॥ नसाखलंखनया॥ ॐ यू एथ श महायूया अयत्रिमिनय

अथ यत्र मितायुष्यं ज्ञानसत्ता त्रायैकामि नियम्यथा ॥ हा य
दा हो तं खगया ॥ उं यत्र मदाय प्र यमी एवे अमक स सुखाव
यांग रु लु स्व अहं ॥ धनममुलस स्या न रु हा लन स्यां तावना
॥ ननाममुल मधसा क मनि पूर्व वजया ति द क्रि ता व या प्रिय
यश्चि मे सं व च क व रि उल न विजा प्रिय अग्रं ने जा गा गी ने म हा
विधं सक वाय यां वि कि त्रि ही ॥ ॐ न्यां जी ना ग य गु य उ दा ने

वजां कृता दिका नयू ध्या दि द व गा य त्रि दि ना पुर्ण समय सत्ता
ज्ञान सत्ता वाहनं रु ग क म दा म नु न पूजा सा व य न ॥ ध्या मि ता
जन विधि थं पूजा ॥ पू य न्या ग ॥ ॥ उं न क म न य हं सा हा ॥ उं
वज या ता य हं सा हा ॥ उं व जा ॥ ॥ उं न व च क व रि य हं
सा हा ॥ उं वि क या प्रि य हं सा हा ॥ उं न जी ना सि न हं रु ॥ उं व ज वि
थं सि न हं रु ॥ उं व ज वि कि त्री न हं रु ॥ उं जी ना ग य गु हं रु ॥ १
१ प्रि य हं सा हा

॥ॐ वज्रनाभं॥ॐ वज्रमालयां॥ॐ वज्रगीर्णक्रीं॥ॐ वज्रनखं अ४
॥ २ ॥ॐ मेघीयसूत्रनायका॥ॐ अमाद्यदिभिर्नखा॥ॐ सर्व
यायजुःसर्वायायविलम्बनं॥ॐ सर्वलोकगमादिघातम
नं॥ॐ गन्धर्वसिन्धुं॥ॐ सुत्रंगमं॥ॐ गगनगजं॥ॐ शान
कं॥ ३ ॥ॐ जम्बवतं॥ॐ चन्द्रचन्द्रपुं॥ॐ रुद्रपात्रय
ं॥ॐ छात्रीनयुं॥ ४ ॥ॐ वज्रगुरुं॥ॐ जम्बवतमिहं॥
ॐ युतिरानकं॥ॐ समनरुद्रं॥ ५ ॥ॐ वज्रपूषं॥

ॐ वज्रधृपं॥ॐ वज्रावलाकीर्णक्रीं॥ॐ गन्धर्वजं अ४॥ ॥ अ
ग्न्यादिघातं॥ॐ वज्राङ्कगजं॥ॐ वज्रपाङ्कजं॥ॐ वज्रस्त
यवं॥ॐ वज्रावला॥ ॥ पंलाचमुनि ॥ र्यधर्माद्यादि॥
॥ अस्मिन् स्थाने रुद्रालगयरावना ॥ ॥ गणावजयज्जलारु
कनया ननजलावी सुमन्युयत्रिकुटा मन्त्रस्य मध्ययिगाका
त्रयकुसिदायत्रिशीभाकमनिरुगवान्महावेगावनं
सर्वकवेर्लङ्घनधर्मयकुमूडा ४६ दीप्यमानं यश्च न ॥

४५
वजां कूदिना हानसत्त्वा मायाह नदिता य॥ ॥ धनधूपनि
लाज्जन॥ पुनस्तान॥ वृणस्यं॥ यत्सगलसकत्रसत्त्विनत्रगस्य
वृद्धवृद्धस्य हापत्रहीगस्य विवृद्धवृद्धे पुश्चागसंगत्रयित्रस्यग
त्सगत्रंरवउगीयत्रमातिषकेत्यत्सगत्रंमत्रनत्राक्षत्रपूजिन
स्यधर्मस्यगनकथिगस्यजनूरुत्रमीलाकगुययुनिहिनस्यमि
नात्मकस्यगत्सगत्ररवउगीयत्रमातिषके॥ यत्सगत्रंयुवनध
र्मत्रस्यनित्यंसत्त्वनिकस्यजिनबंधवत्रस्यनित्यसत्त्वयकात्रयि

विनाशमूक नामध्याययुथममयदिसंसिधकाकयिउं स्वानयि
उं कृष्णसनमयुगिहिंगां॥ त्रयनेआसननयक॥ यगासनंययय
मिस्यध॥ त्रय॥ उं अहिकमनंयथयुगियदस्यध॥ अथिहिन॥ उं
वसंधनियुगियागयस्यध॥ थनजान्वउथसि नकसि हामूकम
कायाडा जानकंगयक॥ अथ यमगयीगाअमूक नामध्याययुथ
मसिनमथिसंसिधकाकयिउं स्वध॥ स्वानयिउं उथं॥ थगिधून
काडा दथमयुगयिउं थयक॥ उथ कृष्णसननयक॥ त्रयनेआसन

नयक॥ उं यगासनस्यध॥ त्रयनदायक॥ उं अहिकमनंयथयु
नियस्यस्यध॥ त्रदागनथियक॥ उं वसंधनियुगियस्यध॥
जान्वत्रयेनकसि हामू जानकंगयाडा॥ अथ यमगयीगाअमूक
नामध्याययुथमसिनमथिसंसिधयनयिउं स्वध॥ १॥ निद्रया
अथ यमगयीगाअमूक नामध्याययिगिययउं त्रयवसंसिधदि
निययिउं स्वध॥ २॥ हगियनामिकासंसिधयनिययिउं स्वध॥
माद्रया॥ ३॥ त्रयर्थस्यगमंसिधयनयिउं स्वध॥ यद्रया॥ ४॥

पचमहदयसंसिध्ययकमयिउस्यध्वा॥ठाकूया॥ ७ ॥ अष्टमहदयसं
 सिध्ययकमयिउस्यध्वा॥खकूया॥ ८ ॥ नवमहदयसंसिध्ययकमयि
 उस्यध्वा॥कसकूया॥ ९ ॥ अष्टमहदयसंसिध्ययकमयिउस्यध्वा॥
 याकूया॥ १० ॥ नवमहदयसंसिध्ययकमयिउस्यध्वा॥गुकूया॥ ११ ॥
 दशमहदयसंसिध्ययकमयिउस्यध्वा॥जिकूया॥ १२ ॥ वाक
 यायजिकू॥ १३ ॥ अथयकमगगठनकायमात्र॥काकयिउस्यध्वा॥
 जिकूथयमात्र॥ लंखकयप्राप्तगया॥ १४ ॥ लखवियक॥ वाक॥ १५

मीचाकइयके॥किगनके॥विमरून॥देवाथियके॥ॐ॥कासधु
गईसादा॥युगपिउगधु॥युगपिउधय॥काकपिउखानपि
उगधु॥काकपिउखानपिउधय॥हायाडीयुयकनधु॥
यायदसनायनय॥मालहूयाडीपिउथयाधसविदिहायके॥
काकपिउखानपिउखानसियिगाथिनागयके॥थमिदस
पिउधयकेविधिसमाक॥५५॥गक॥अगयायागकी
गकसकयकगगनधननययराददयके॥दशकर्मपिउ

थययाग॥कागजुसि॥नायकाडाडीकासंवेत्यथय॥अगंदय
कमदयी॥कंसवेत्यदयके॥सिसिगीथसजुविधनसकि
कयुनिहायाय॥काथगजुट॥अनथकट॥अनंथकट॥अ
नंथकट॥अनंथकट॥अनंथक॥अनंकजुअनकुकिंया२गत्र
कुकिनिंथक२यकनिगशालामंया१थननवेत्यदयके॥०॥
हकायामिगयक्रयालाहानिनगयलंरवकायनक३५॥
निकायनक५५॥पिखात्रयस॥युयकयन॥यत्रकाकेनयके॥

वायव्य के मान रख सिसका मास मान द्रव्य के, ध्वनि नदि सं
 रख वासव जा मंदिय जान रख नान के ॥ धन लिख सदा सं, प्रि
 लुथय ॥ क्रयां हि सस्य मि शाय, कृत्वा य के, लय न लाय के, ल
 खं हाय लादा नि प्रय के, यल वासन काय के, अथ अमूक नाम ध्यय
 काक विपुं स्वधा ॥ ज्ञाया खगयक ॥ दिवं गन् अमूक नाम ध्यय ह्यन
 विपु संय स्वा स्वधा ॥ २ ॥ ज्ञाया खगय ॥ दिवं गन् अमूक नाम ध्यय पु
 न विपु संय स्वा स्वधा ॥ ३ ॥ धूसगय ॥ ग्व ३ थय, विधि थं य जायाय ॥

नका कायनामकलजासं दृष्टाद्वाङ्गनयश्चाय॥ पुनः अलिग्न
पुस्त्यं द्याय॥ उ नमो लोभवत्यसर्व इन्द्रियानि तन्मधन त्यादि॥ म पुनरथि
त्रे स्थानमना॥ किमना॥ ग्वनचन तं च धनासायकं सिकक सखरा
क इद्रयक जावन सखसित्वाद्यादि॥ हागा कन विभक्त मिगयक तरय
कायनरायाङ्ग दृष्टक॥ यमिदियमालिका क्रियाविधिश्च ना॥ ५५॥
समिकृद्गुनि संवस विबुधय॥ स्य दृक् दृक् दिवंगगश्रुतास मउलकी
य अलि सिलविधिथं पूजा॥ हा दृक् दृक् सिल॥ नास दृक् दृक् दृक् पां

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ स्वस्ति सः ॥ कुरु कुरु लकाय ननययक दिय सया खा जान पिउ
 होया सत्रगयक लिकी किल्या मजाग (थं) शना ॥ दया पिउ थयके
 याग स्वस्ति सः रुन येयर राउ छा यक दडा या जडा स्वजस इइ
 लंख थाय नायाय थन इइ लख गया सलिसिस् कि ग्वगन के ॥

ॐ वज्र गज न्यास त्रयं जत्र याग विदमासयुष्यं नमः ॥ धि त्रयाग पि
 उमासयुष्यं नमः ॥ थन येयर रादस के कि गन के ॥ ॐ महा भ
 भना धियगी इर्जगिय निष्ठा धन येयर कात्रक ॐ दं मासयुष्यं
 नमः ॥ थन सनान याय के ॥ ॐ महा भ भना धियगि इर्जगिय नि
 ष्ठा धन येयर कात्रकं यजादकं साहा ॥ दडा राहा गिन धिय कुं
 मय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दत्र फलि ॥ ॐ वं ॐ जि
 खं ॥ इइ ॥ ॐ गं ॐ खं ॥ ॐ ज थहि जाग मा गुन यादि ॥ विग

सिंधुजजम॥ स्नानमयक वा कथं थ॥ ॐ म हाम्भना धियनि
सर्वइर्गनिय तिल्लधनं ये ह्यहं नक रनु सिंधु ननु वन सादा॥
दं जया रुक वा कयाय सकनां थ॥ इतमूत्रादिधुनि मग विय॥
धनं जल यया स इ इ नख थ छा ज हाय के॥ यमया स वि मा र्था य र्य म
दं तु निहं य ग॥ यमहात्रं वि नि मूकं ग हि मां स न न यं॥ स्नानमन॥
ॐ यत्थ १ म हाम्भना सादा॥ ॐ न मा र्ग वय सर्व इ र्ग निय तिल्लधनः
ना जाय ग था ग नाया १ अ न ह र्क स म्य कं वृ छा य॥ ग य था॥ ॐ ल्लधनं

विल्लधनं सर्व विल्लधनं ॐ शुद्ध विमल दिवंगनं जमूकनामथः
याय सर्व कर्म वन विल्लधनं स्वथा॥ ॐ न माय मधर्म ना जाय ग
द्वरुगिक संका सं मला गं ज पु ला स नं सर्व याय ह यं गु सं मा र्ग याः
मिगं न न यं द कि न म हि या न र क पु व र्क गु वि क मं द द ह र्क म
महा धात्रं पु ना धिय म रु धि कं ला य य ग॥ ग नं नि र्यं धर्म ना र्जः
न म सु गं॥ धनं द व या रु ज न या गा स न य न य नि या क था य १॥ ध
न का क यि ३ स्नान यि ३ नि थ य॥ कृ न ला स ग य के॥ अ य य म्भं

ज्ञानां सर्वसायत्रियत्रयम् ॥ नमस्तु ह्रीं श्रीं ब्रह्माय नमः ॥
दत्तं यत्तु मा त्रयत्रयं सत्त्वं वाधियाप्येन ॥ नमस्तु ह्रीं श्रीं
षष्ठ्या नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
लाभ्यमा लाग्नामीना नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
यगन्मदवीनमस्तु ह्रीं ॥ द्वात्रिंशत्तमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
क १४ धनरावनिर्ज्ञानं द्वात्रिंशत्तमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
यत्तु त्रिंशत्तमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं

नमस्तु ह्रीं ॥ वक्रं दोषादवच्छेदं लोकपालचक्रदिग्गजं ॥ अग्निना
कमवायुवरुणाधियगिनमस्तु ह्रीं ॥ जननीं गन्तव्यं नमस्तु ह्रीं
मनुजानां गन्तव्यं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं ॥
क्षेत्रादिमातृका गन्तव्यं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
॥ सग्वनमयं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं
नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं नमस्तु ह्रीं ॥
॥ १२ ॥ शान्तिं शान्तिं शान्तिं ॥

शु शमभुलपूजा॥ इखवनक, कु कुजका, मभुलनियूजा, मलजा
 शु नथं, अस्मि सिप्रधूनकाजी, मभुलधिनक, खानगन॥ सग्वनय
 शु ॥ क्रमायन, समसंधूनकाजी, ग्वत्रधामठायनज, यंरुगीर्थकु
 य अस्मि नस्या॥ धनलिदगपिउथयक, शायक धूनकाजी, ग्व
 मि उवनकाका इखवनक, यंरुगहविय, लिठापिउथयक्र
 यानविय, वसंधिनक॥ धनलि कायनास, लंखयायनथन, स
 र्ययागनिनक, यान ३०० सुदवनायागयात्र ३ धनलिगुत्रया

यानिसगयवा, न ३ धूनकाजी, गुत्रसाचाकनदूलाजी, दशनिया
 य, कलिहाजायाजी॥ अनयाग्व २३ इधन, लंखधनथसं, पु
 सि ०० नासडा हाजी, जरुजीलन, सक्रियुगिहागाल लाचकं
 जाडाजी, अस्मिजी, गथिरासाधनयासं, नक्रयैयथचकं क्र
 १३ कंसयैयसइथह, क्रिसक्रयया अगनयैय इधनक, युगिहा
 शायगुत्रमानकायम, क्रुक्रुदगपिउथनककाया॥ निद्रय
 सि ०० नासह, य, यैयसक्रियुगिहायाय, धिसानमूमा